हैलन कैलर

लेखनः डेविड ए. एडलर

चित्रः जॉन वॉलनर

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा



हैलन कैलर बहरी और अंधी थीं।

इसके बावजूद उन्होंने बचपन से ही

अपने हाथों से बोलना और लिखना सीखा।

बाद में उन्होंने कई किताबें लिखीं,

जगह-जगह जा भाषण दिए।

उन्होंने शान्ति और समान अधिकारों

के लिए संघर्ष किया।

उन्होंने कई लोगों के मन में

यह उम्मीद जगाई कि

वे भी अपने सपने साकार कर सकते हैं।

हैलन कैलर अपने समय की

महान स्त्रियों में एक थीं।

हैलन कैलर

लेखनः डेविड ए. एडलर

चित्रः जॉन वॉलनर

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा



जॉनथन व लिआ,

शाना, डेविड, तथा शिरा के लिए।

डी.ए.ए.

विद्राही आत्माओं के लिए

जो धड़कते दिल से

कुछ घटने का इन्तज़ार कर रही हों।

जे.सी.डब्लू.

अनुक्रम



1. बीमारी

हैलन कैलर एक लेखिका और वक्ता थीं।

वे राष्ट्रपतियों की मित्र थीं।

हैलन बहरी और अंधी थीं।

इन चुनौतियों के बावजूद वे अपने

समय की महान स्त्रियों

में शुमार की जाती थीं।



हैलन का जन्म

27 जून 1880 में हुआ था।

वे अलाबामा के एक छोटे

कस्बे में पैदा हुई थीं।

वे एक सुन्दर शिशु थीं,

और बेहद चतुर भी।

वे छाह माह की आयु

में ही बोलने लगी थीं।

अपनी पहली सालगिरह के पहले

उन्होंने चलना शुरू कर दिया था।





पर तब अपनी दूसरी सालगिरह
के कुछ माह पहले
हैलन बीमार पड़ीं। इतनी बीमार कि
चिकित्सक ने सोचा कि नन्ही
की मौत ही हो जाएगी।

हैलन बच तो गईं,
पर उनकी देखने और सुनने की शक्ति खो गई।
इस घटना के बाद हैलन की
दुनिया अचानक अंधेरी और मौन हो गई।



2. अंधकार से प्रकाश की ओर



हैलन कैलर लोगों को
बोलते नहीं सुन सकती थीं,
सो उन्होंने नए शब्द नहीं सीखे।
जल्द ही वे उन तमाम शब्दों को भी भूल गईं
जिन्हें वे पहले जानती थीं।
हैलन का अपनी बात कहने का
अपना ही तरीका था।
जब वे किसी को धक्का देतीं
तो उनका मतलब होता था 'जाओ'।
जब वे किसीको अपने पास खींचतीं
तो उनका मतलब होता था 'आओ'।
जब हैलन चश्मा पहनने का नाटक करतीं
उनका मतलब होता 'पिता'।











हैलन के तकरीबन

साठ ऐसे इशारे थे।

वे बहुत कुछ कहना चाहती थीं,

पर कह नहीं पाती थीं।

कई बार हैलन लोगों

के होंठ छूतीं।

जब उनके होंठ हिलते,

वे समझ जातीं कि वे कुछ बोल रहे हैं।

पर उन्हें यह समझ नहीं आता

कि आखिर वे कह क्या रहे हैं।

हैलन भी अपने होंठ हिलातीं,

अपने हाथ लहरातीं।

पर वे जानती थीं कि वे

दरअसल कुछ बोल नहीं रही हैं।



"यह मुझे बेहद नाराज़ करता,"
हैलन ने बाद में लिखा, कि
"मैं गुस्से में लातें मारती और चीखती।"
हैलन के माता-पिता उन्हें चिकित्सकों के पास ले गए।
पर हैलन की देखने और सुनने में मदद करने
के लिए कुछ भी नहीं किया जा सकता था।
सो उन्होंने हैलन के लिए
एक शिक्षिका की तलाश शुरू की।

वे एलैक्ज़ैंडर ग्राहम बैल से मिलने
वॉशिंगटन डी.सी. गए।
बैल ने टेलिफोन का आविष्कार किया था।
डॉ. बैल एक समय बधिरों
के स्कूल में शिक्षक रह चुके थे।



"वे मेरे इशारों को समझे,"
हैलन ने बाद में लिखा।
"मैं यह समझ गई।
मुझे उनसे फौरन प्यार हो गया।"
डॉ. बैल ने हैलन के लिए
एक शिक्षिका तलाशने में मदद की।

3. वह सजीव शब्द





''मेरे जीवन का सबसे महत्वपूर्ण दिन,''

हैलन ने बाद में लिखा,

''वह था जब मेरी शिक्षिका

एन मैन्सफील्ड सलिवन

मेरे पास आईं।

यह था 3 मार्च 1887 का दिन।

हैलन उस वक्त छह साल की थीं।





हैलन के पहले पाठ में

एन ने हथेली पर उंगली से बनाए जाने वाले

अक्षरों का उपयोग किया।

उन्होंने हैलन की हथेली पर डी-ओ-एल-एल

(डॉल यानी गुड़िया) लिखा,

तब हैलन को उसकी गुड़िया थमाई।

पर यह हैलन के लिए यह सिर्फ एक खेल था।

उसे यह पता ही नहीं था कि

जो उसकी हथेली पर लिखा गया

वह एक शब्द 'गुड़िया' था।

उसे यह पता नहीं था कि

हरेक वस्तु का एक नाम होता है।

एक दिन बाहर घूमते समय
एन और हैलन पानी के
एक पम्प के पास पहुंचे।
एन ने हैलन का एक हाथ
पानी में डाला।
तब हैलन की दूसरी हथेली पर
डब्ल्यू-ए-टी-ई-आर (वॉटर यानी पानी) लिखा।
अचानक हैलन को समझ आ गया कि
एन उसे क्या सिखाने की कोशिश कर रही थी।







वह समझ गई कि हर चीज़
का एक नाम होता है।
उस दिन हैलन ने
कई नए शब्द सीखे।
उस रात पहली बार
हैलन कैलर 'एक नए'
दिन का बेताबी से
इन्तज़ार करने लगी।

4. प्यार और उम्मीद



हैलन ने सैकड़ों,
तब हज़ारों नए शब्द सीखे।
यों उसने अपने हाथों से,
बोलना और सुनना सीखा।



1900 में हैलन

रैडक्लिफ कॉलेज में पढ़ने गईं।

एन सलिवन उसके पास बैठतीं।

कक्षा में जो कुछ कहा जाता,

उसे वे हैलन की हथेली पर लिख कर बतातीं।

जब हैलन कॉलेज में ही थीं

उन्होंने *द स्टोरी ऑफ माय लाइफ* लिखी।

उनकी इस रचना को दुनिया भर के लोगों ने पढ़ा।

उसने कागज़ पर बने उभारों

को छू कर पढ़ना सीखा।

अंधों के लिए बनाई गई इस खास लिपि

को ब्रेल लिपि कहा जाता है।

जब हैलन दस वर्ष की हुई

उसने बोलना सीखा।

वह उन ध्वनियों को सुन नहीं सकती थी

जो वह खुद या दूसरे निकालते थे।

इसलिए वे साफ़-साफ़ बोलना कभी नहीं सीख पाईं।





बाद में हैलन ने दूसरी पुस्तकें लिखीं।

उन्होंने अमरीका भर में सफ़र किया।

वे जहाँ भी जातीं हज़ारों

लोग उन्हें सुनने आते।



हैलन युरोप व जापान भी गईं।

हैलन ने महिला अधिकारों के

जुलूसों में हिस्सेदारी की।

उन्होंने कामगारों और गरीबों

की ज़रूरतों के बारे में लिखा।





द्वितीय विश्वयुद्ध के
दौरान और उसके बाद
हैलन उन सैनिकों से मिलने गईं
जो युद्ध में अंधे और बहरे हो गए थे।
हैलन ने उनमें यह उम्मीद जगाई
कि वे भी एक पूरी और खुशहाल
ज़िन्दगियाँ बिता सकते हैं।



हैलन कैलर ने उन्हें बताया

कि वे इसलिए प्रसन्न रह पाती हैं,

क्योंकि उनके अच्छे मित्र हैं

और करने के लिए रोचक काम।



1964 में हैलन के श्रेष्ठ काम के लिए

राष्ट्रपति लिंडन जॉनसन ने

उन्हें 'प्रैसिडेंशियल मेडल ऑफ फ्रीडम से नवाज़ा।



1 जून 1968 में हैलन की मृत्यु हुई।

दुनिया भर में लोगों ने यह खबर सुन आँसू बहाए।

ऐसे लोगों की दुनिया ने, जिसे वे देख नहीं सकती थीं,

जिन्हें वे सुन नहीं सकती थीं। पर जो उनसे प्यार करते थे,

और हैलन कैलर भी उन्हें प्यार करती थीं।

महत्वपूर्ण तिथियाँ

27 जून 1880 - हैलन कैलर का टुस्कम्बिया, अलाबामा में जन्म हुआ।

फरवरी 1882 - एक बीमारी के कारण हैलन अंधी और बहरी हो गईं।

मार्च 1887 - हैलन की मुलाकात एन सलिवन से हुई।

1900 - हैलन रैडक्लिफ कॉलेज की छात्रा बनीं।

उन्होंने अमेरिकन फाउन्डेशन फॉर द ब्लाइंड के लिए काम आरंभ किया।

20 अक्तूबर 1936 - एन सलिवन की मृत्यु हुई।

1964 - हैलन कैलर को प्रैसिडेंशियल मेडल ऑफ फ्रीडम से नवाज़ा गया।

1 जून 1968 - हैलन कैलर की मृत्यु हुई।

डेविड ए. एडलर सचित्र जीवनियों की श्रृंखला के लेखक हैं। उनकी लोकप्रिय रचना *डॉ. मार्टिन लूथर किंग, जूनियर* के बाद यह उनकी दूसरी क़िताब है। वे अपने परिवार के साथ न्यू यॉर्क राज्य में रहते हैं।

जॉन वॉलनर ने दर्जनों बाल पुस्तकों को चित्र दिए हैं। इनमें डेविड ए. एडलर की लिखी सचित्र जीवनियाँ भी शामिल हैं। वे मेन में रहते हैं।

द हॉर्न बुक ने हैलन कैलर की इस सचित्र पुस्तक की प्रशंसा करते हुए लिखा था - "सरल भाषा और जीवन्त चित्र हैलन के जीवन और उनकी उपलब्धियों की बुनियादी जानकारी देते हैं।"